नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विवि में 'युवाओं के जीवन में आत्मज्ञान का महत्व' विषय पर व्याख्यान

सत्य, चित्त और आनंद ही आत्मा का स्वरूप है – स्वामी पितंबरानंद

वर्धा, 7 अक्टूबर 2018: 'मैं' प्रतिक्षण बदलता है। 'मैं' का मतलब 'आत्मा का होना' या 'अस्तित्व का होना' और 'जानना' है, इन सबके बीच मैं का अस्तित्व है तभी मनुष्य की स्मृति कायम है। सत्य, चित्त, और आनंद ही आत्मा का स्वरूप है। आत्मा का स्थायी आस्तित्व है और यही स्वामी विवेकानंद का दर्शन है। 'स्प्रिचुअल रिजनरेशन ऑफ मैन' यही रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद की मुख्य शिक्षा है। उक्त विचार रामकृष्ण मठ के वरिष्ठ स्वामी पितंबरानंद ने व्यक्त किये। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के उपलक्ष्य में संचालित व्याख्यान श्रृंखला के तहत 5 अक्टूबर को गालिब सभागार में 'युवाओं के जीवन में आत्मज्ञान का महत्व' विषय पर बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय

के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। कार्यक्रम में महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी समाज कार्य केंद्र के निदेशक प्रो. मनोज कुमार एवं स्वामी विवेकानंद केंद्र वर्धा के डॉ. बावनकर मंचासीन थे।

स्वामी पिताम्बरानन्द ने कहा कि जो सोच सकता है, जिसमें भावनाएं होती है और जो अपनी सोच के अनुरूप कार्य भी कर सकता है, वही 'युवा' है। इस मायने में युवा होने का उम्र से कोई रिश्ता नहीं रह जाता है। उन्होंने 'आत्म' और आत्मा के अर्थ को विस्तारपूर्वक बताया। उन्होंने सुषुप्ति की अवस्था की विवेचना की, इसका अर्थ होता है कि गहरी नींद में सोया हुआ, जिसमें आदमी स्वप्न भी नहीं देख सकता है। उन्होंने कहा कि जागृति, स्वप्न के अनुभव, सुषुप्ति के अनुभव के जरिये हम आत्मज्ञान को प्राप्त कर सकते हैं। केवल जागृत अवस्था के अनुभव के आधार पर सत्य की प्राप्ति नहीं हो सकती। स्वप्न और सुषुप्ति के अनुभव भी हमें लेने होंगे। गहरी नींद में कोई व्यक्ति विशिष्ट नहीं होता, गहरी नींद में सब एकाकार हो जाते हैं। गहरी नींद का अभिप्राय

है, जिसमें मनुष्य की इन्द्रियां कार्य नहीं करती, तब मनुष्य को सुख मिलता है। यह अनायास सुख है। बिना किसी प्रयत्न के मिलने वाला सुख है। इसमें कोई दुख नहीं होता है और यही सबसे बड़ी खुशी है।

स्वामी जी ने एक उदाहरण देते हुए बताया कि एक ऊँट जब बबूल के कांटों को खाता है तो वह इसलिए नहीं खाता कि वे कांटे उसे प्रिय हैं, बल्कि वह कांटे इसलिए खाता है क्योंकि उस कांटे को खाते हुए जब उसके मुँह में खून आता है जिससे उसे स्वाद आता है और उसे लगता है कि उस कांटे में स्वाद है। इसका तात्पर्य है कि हम इंद्रियों के वशीभूत होकर क्या-क्या नहीं करते। हम सिर्फ इन्द्रिय सुख के कारण ही सारे ऐशो-आराम प्राप्त करना चाहते हैं।

अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति प्रो.गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि 'जगत का हित और अपना मोक्ष' ही विवेकानंद और रामकृष्ण मिशन का मुख्य उद्देश्य रहा है। उदार चरित मनुष्य अपना पराया, मैं- तु के बजाय पूरी वसुधा के लोगों को कुटुंब मानता है। मनुष्य को अपने 'स्व' का निस्तार करते जाना चाहिए। 'मैं' और 'अन्य' के बीच एक बड़ी रेखा खिंच दी जाती है, जिस रेखा को पार करने के लिए उच्च कोटि के आत्मबल की जरूरत होती है। विवेकानंद और गांधी दो ऐसे महापुरुष हैं जो 'स्व' को 'अन्य' में विलीन कर लेने वालों में रहे हैं। इन दोनों महापुरुषों को हम एक रूप करते हुए अपने आत्म विकास को प्राप्त कर सकते हैं।

कार्यक्रम में महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी समाज कार्य केंद्र के निदेशक प्रो. मनोज कुमार ने भी अपने विचार रखे तथा उपस्थितों का आभार जताया। संचालन जनसंपर्क अधिकारी डॉ. बी.एस. मिरगे ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।